

भारत का राजपत्र

The Gazette of India

ग्राम्य भारत

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उल्लेख (i)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० ९२] नई दिल्ली, शुक्रवार, मार्च १२, १९७६/फाल्गुन २२, १८९७

No. ९२] NEW DELHI, FRIDAY, MARCH 12, 1976/PHALGUNA 22, 1897

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed
as a separate compilation.

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

NOTIFICATION

New Delhi, the 12th March 1976

G.S.R. 123(E).—The following Proclamation by the President is published for general information:

Whereas, I, Fakhruddin Ali Ahmed, President of India, have received a report from the Governor of the State of Gujarat and after considering the report and other information received by me, I am satisfied that a situation has arisen in which the Government of that State cannot be carried on in accordance with the provisions of the Constitution of India (hereinafter referred to as "the Constitution");

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by article 356 of the Constitution and of all other powers enabling me in that behalf, I hereby proclaim that I—

- (a) assume to myself as President of India all functions of the Government of the said State and all powers vested in or exercisable by the Governor of that State;
- (b) declare that the powers of the Legislature of the said State shall be exercisable by or under the authority of Parliament; and
- (c) make the following incidental and consequential provisions which appear to me to be necessary or desirable for giving effect to the objects of this Proclamation, namely:—

- (i) in the exercise of the functions and powers assumed to myself by virtue of clause (a) of this Proclamation as aforesaid, it shall be lawful for me as President of India to act to such extent as I think fit through the Governor of the said State;
- (ii) the operation of the following provisions of the Constitution in relation to that State is hereby suspended, namely:—
- so much of the proviso to article 3 as relates to the reference by the President to the Legislature of the State;
 - so much of clause (2) of article 151 as relates to the laying before the Legislature of the State of the Reports submitted to the Governor by the Comptroller and Auditor-General of India;
 - articles 163 and 164;
 - so much of clause (3) of article 166 as relates to the allocation among the Ministers of the business of the Government of the State;
 - articles 167 and 169;
 - clause (1) of article 174; articles 175, 176 and 177;
 - clause (c) of article 179 and the first proviso thereto;
 - articles 181, 188, 189, 193, 194, 196 and 198;
 - clauses (3) and (4) of article 199; articles 208 to 211 (both inclusive);
 - the proviso to clause (1) and the proviso to clause (3) of article 213; and
 - so much of clause (2) of article 323 as relates to the laying of the report with a memorandum before the Legislature of the State;
- (iii) any reference in the Constitution to the Governor shall in relation to the said State be construed as a reference to the President and any reference therein to the Legislature of the State or the Houses thereof shall, in so far as it relates to the functions and powers thereof, be construed, unless the context otherwise requires, as a reference to Parliament, and, in particular, references in article 213 to the Governor and to the Legislature of the State or the Houses thereof, shall be construed as references to the President and to Parliament or the Houses thereof respectively:
- Provided that nothing herein shall affect the provisions of article 153, articles 155 to 159 (both inclusive), article 299 and article 361 and paragraphs 1 to 4 (both inclusive) of the Second Schedule or prevent the President from acting under sub-clause (i) of this clause to such extent as he thinks fit through the Governor of the said State;
- (iv) any reference in the Constitution to Acts or laws of or made by the Legislature of the State shall be construed as including a reference to Acts or laws made, in exercise of the powers of the Legislature of the State, by Parliament by virtue of this Proclamation, or by the President or other authority referred to in sub-clause (a) of clause (1) of article 357 of the Constitution and the Bombay General Clauses Act, 1904, (Bombay Act I of 1904) as in force in the State of Gujarat, and so much of the General Clauses Act, 1897 (10 of 1897), as applies to State laws, shall have effect in relation to any such Act or law as if it were an Act of the Legislature of the State.

FAKHRUDDIN ALI AHMED.

President.

NEW DELHI;

The 12th March, 1976.

[No. F.V.11013|7|GUJ|76-S&P (D-V)]

S. L. KHURANA,

Secretary.

NEW DELHI;

The 12th March, 1976.

ORDER

New Delhi, the 12th March 1976

G.S.R. 124(E).—The following Order by the President is published for general information:

In pursuance of sub-clause (i) of clause (c) of the Proclamation issued on this the 12th day of March, 1976 by me under article 356 of the Constitution of India, I hereby direct that all the functions of the Government of the State of Gujarat and all the powers vested in or exercisable by the Governor of that State under the Constitution or under any law in force in that State, which have been assumed by the President by virtue of clause (a) of the said Proclamation, shall, subject to the superintendence, direction and control of the President, be exercisable also by the Governor of the said State

FAKHRUDDIN ALI AHMED,
President.

NEW DELHI;
The 12th March, 1976.

[No. F.V.11013|7|GUJ|76-S&P (D-V)]

NEW DELHI;
The 12th March, 1976.

S. L. KHURANA,
Secretary.

गृह मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 12 मार्च, 1976

सा० का० नि० 123 (अ).—राष्ट्रपति द्वारा जारी की गई निम्नलिखित उद्घोषणा सर्वसाधारण के सूचनार्थ प्रकाशित की जा रही है:—

यह: मुझे, भारत के राष्ट्रपति फब्रुअरी अली अहमद को गुजरात राज्य के राज्यपाल से एक रिपोर्ट प्राप्त हुई है, और इस रिपोर्ट तथा मुझे प्राप्त अन्य सूचना पर विचार करने के आद मेरा समाधान हो गया है कि ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई है, जिसमें राज्य का शासन भारत दें संविधान (जिसे इसमें इसके पश्चात् "संविधान" कहा गया है) के उपबन्धों के अनुसार नहीं चलाया जा सकता है;

अतः अब मैं, संविधान के अनुच्छेद 356 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का तथा उस निमित्त मुझे समर्थ बनाने वाली अन्य सभी शक्तियों का प्रयोग करते हुए एतद्वारा उद्घोषणा करता हूँ कि:—

- (क) उक्त राज्य की सरकार के सभी कृत्य और उस राज्य के राज्यपाल में निहित, तथा उनके द्वारा प्रयोक्तव्य सभी शक्तियाँ, भारत के राष्ट्रपति के रूप में स्वयं सम्भालता हूँ;
- (ख) घोषित करता हूँ कि उक्त राज्य के विधान मंडल का शाक्तया संसद द्वारा या उसके प्राधिकार के अधीन प्रयोक्तव्य होंगी; और

(ग) निम्नलिखित आनुषंगिक और पारिणामिक उपबंध करता हूँ जो इस उद्धोषणा के उद्देश्यों को प्रभावी बनाने के लिए मुक्ते आवश्यक या आँछनीय प्रतीत होते हैं ; अर्थात् :—

(i) इस उद्धोषणा के उपर्युक्त खंड (क) के आधार पर मेरे द्वारा संभालि गए कृत्यों और शक्तियों का प्रयोग करने में, मेरे लिए भारत के राष्ट्रपति के रूप में उस सीमा तक जिस तक मैं ठीक समझूँ उक्त राज्य के राज्यपाल के माध्यम से कार्य करना विधिपूर्ण होगा ;

(ii) उक्त राज्य के संबंध में संविधान के निम्नलिखित उपबंधों के प्रवर्तन को एतद्वारा निलंबित किया जाता है, अर्थात् :—

अनुच्छेद 3 के परन्तुक का उतना भाग जितने का संबंध राष्ट्रपति द्वारा राज्य के विधान मंडल को निवेश करने से है ;

अनुच्छेद 151 के खंड (2) का उतना भाग जितने का संबंध भारत के नियंत्रक और महासेवा परीक्षक द्वारा राज्यपाल के समक्ष प्रस्तुत किए गए प्रतिवेदनों को राज्य के विधान मंडल के समक्ष रखे जाने से है ;

अनुच्छेद 163 और 164 ;

अनुच्छेद 166 के खंड (3) का उतना भाग जितने का संबंध राज्य सरकार के कार्य के मंत्रियों के बीच बढ़वारे से है ;

अनुच्छेद 167 और 169 ;

अनुच्छेद 174 का खंड (1) ; अनुच्छेद 175, 176 और 177 ;

अनुच्छेद 179 का खंड (ग) और उस अनुच्छेद का प्रथम परन्तुक ;

अनुच्छेद 181, 188, 189, 193, 194, 196 और 198 ; अनुच्छेद 199 का खंड (3) और खंड (4) ;

अनुच्छेद 208 से 211 (जिसमें ये दोनों सम्मिलित हैं) ;

अनुच्छेद 213 के खंड (1) का परन्तुक और खंड (3) का परन्तुक ; और

अनुच्छेद 323 के खंड (2) का उतना भाग जितने का संबंध आपन सहित रिपोर्ट को राज्य के विधान मंडल के समक्ष रखे जाने से है ;

(iii) संविधान में राज्यपाल के प्रति किसी निवेश का अर्थ उस राज्य के सम्बन्ध में राष्ट्रपति के प्रति निवेश समाया जायेगा और उसमें राज्य के विधान मंडल या विधान सभा के प्रति किसी निवेश का, जहाँ तक उसका संबंध उसके कृत्यों और उसकी शक्तियों से है, अर्थ, जब तक कि संदर्भ द्वारा अन्यथा अपेक्षित न हो, सदृश के प्रति निवेश समाया जाएगा और विशिष्टतया अनुच्छेद 213 में राज्यपाल और राज्य के विधान मंडल

या उसके सदनों के प्रति निवेशों का अर्थ, क्रमशः राष्ट्रपति और संसद् या उसके सदनों के प्रति निवेश लगाया जाएगा :

परन्तु इसमें की कोई बात अनुच्छेद 153, अनुच्छेद 155 से लेकर अनुच्छेद 159 तक (जिसमें ये दोनों सम्मिलित है), अनुच्छेद 299 और अनुच्छेद 361 तथा द्वितीय अनुसूची के पैरा 1 से लेकर पैरा 4 तक (जिसमें ये दोनों सम्मिलित है) के उपबन्धों पर प्रभाव नहीं ढालेंगी और न राष्ट्रपति को उस खंड के उपबंध (i) के प्रधीन उस सीमा तक जहाँ तक वह ठीक समझे उक्त राज्य के राज्यपाल कि माध्यम से कार्य करने से निवारित करेगी ;

(iv) संविधान में राज्य के विधान मंडल के या एतद्वारा बनाए गए अधिनियमों या विधियों के प्रति किसी निर्देश का ऐसे अर्थ लगाया जाएगा मानो उसमें अन्तर्गत इस उद्घोषणा के आधार पर संसद् द्वारा या राष्ट्रपति या संविधान के अनुच्छेद 357 के खण्ड (1) के उपबंध (क) में निर्दिष्ट अन्य प्राधिकारी द्वारा राज्य के विधान मंडल की शक्तियों का प्रयोग करते हुए बनाए गए अधिनियमों या विधियों के प्रति निर्देश है, और बम्बई साधारण खण्ड अधिनियम, 1904 (1904 बम्बई का अधिनियम 1) जिस रूप में गुजरात राज्य में सागू है और साधारण खण्ड अधिनियम 1897 (1897 का 10) का उतना भाग जितना राज्य विधियों पर लागू है, ऐसे किसी अधिनियम या विधि के बारे में ऐसे प्रभावी होगा मानो यह उस राज्य के विधान मंडल का अधिनियम हो ।

नई दिल्ली;
12 मार्च, 1976

फखरहीन श्री अहमद,
राष्ट्रपति ।

[सं. V/11013/7/गुज/76-एस ए फी (डी-V)]

नई दिल्ली;
12 मार्च, 1976

सुन्दर लाल खुराना,
सचिव ।

प्रावेश
नई दिल्ली, 12 मार्च, 1976

सं. का. नि. 124 (अ).—राष्ट्रपति द्वारा जारी किया गया निम्नलिखित आदेश सर्वसाधारण के सूचनार्थ प्रकाशित किया जा रहा है :—

भारत के संविधान के अनुच्छेद 356 के प्रधीन मेरे द्वारा आज मार्च 1976 के बारतवे दिन जारी की गई उद्घोषणा के खण्ड (ग) कि उपबंध (i) का अनुसरण करते हुए मैं एतद्वारा निर्देश देता हूँ कि गुजरात राज्य सरकार के सभी कृत्य और संविधा-

के अधीन या उस राज्य में प्रवृत् किसी विधि के अधीन उस राज्य के राज्यपाल में निहित या उसके द्वारा प्रयोक्तव्य सभी शक्तियाँ, जिनको राष्ट्रपति ने उक्त उद्घोषणा के खंड (क) के आधार पर स्वयं सम्भाल लिया है, राष्ट्रपति के अधीक्षण, निदेशन और नियंत्रण के अध्यधीन रहते हुए, उक्त राज्य के राज्यपाल द्वारा भी प्रयोक्तव्य होगा।

नई दिल्ली;

12 मार्च, 1976

फखरहीन अली अहमद,

राष्ट्रपति ।

[सं. फा० V/11013/7/गुज/76—एस एच पी (डी-V)]

नई दिल्ली;

12 मार्च, 1976

अना,

वि ।